पढ़ना है समझना
कूदती जुराबें

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-880-5

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – कृतिका एस. नरूला

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन :** 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन :** 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन :** 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन :** 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन :** 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	: पी. राजाकुमार	मुख्य उत्पादन अधिकारी	: शिव कुमार
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल	मुख्य व्यापार प्रबंधक	: गौतम गांगुली

कूदती जुराबें
माधव

एक दिन माधव सुबह-सुबह तालाब पर रुक गया।
तालाब का ठंडा-ठंडा पानी उसे बहुत पसंद है।
उसे तालाब में डुबकियाँ लगाने में बहुत मज़ा आता है।
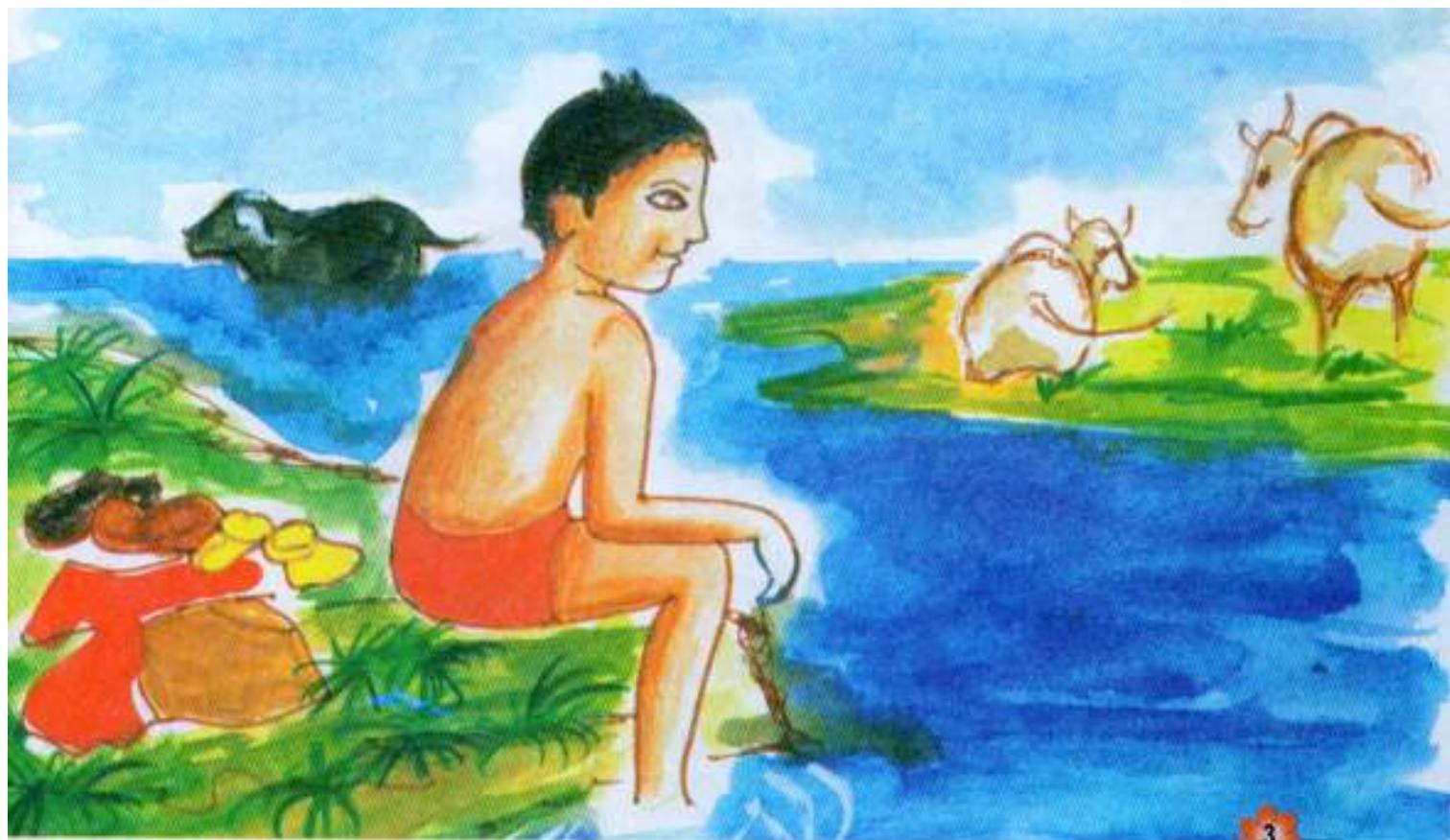
3

माधव ने जूते और ज़ुराबें उतारीं और एक तरफ़ रख दीं।
उसने अपने कपड़े भी उतार कर एक तरफ़ रख दिए।
वह पानी में पैर डाल कर तालाब के किनारे बैठ गया।

4

बहुत देर माधव तालाब में छोटे-छोटे पत्थर फेंकता रहा। उसे पत्थर से तालाब में बनने वाले गोले भी पसंद हैं। वह ऐसे गोले बनाने तालाब पर कई बार आता है।

माधव की नज़र तालाब की मछलियों पर पड़ी।
उसने पत्थर फेंकना बंद कर दिया।
माधव गौर से मछलियों को देखने लगा।

माधव ने काली मछली देखी।
माधव ने सुनहरी मछली देखी।
उसने चमकीली मछली भी देखी।

वह झुककर मछलियों को पास से देखने लगा।
तालाब में बहुत सारी मछलियाँ थीं।
कुछ मछलियाँ छोटी-सी थीं और कुछ बड़ी।

माधव मछलियों को पास बुलाना चाहता था।
उसने तालाब में रोटी के टुकड़े डाले।
रोटी खाने के लिए खूब सारी मछलियाँ आ गईं।

माधव ने मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।
सारी मछलियाँ भाग गईं।
एक भी मछली हाथ नहीं आई।

माधव ने मछली पकड़ने के लिए डुबकी लगा दी।
उसने हाथ बढ़ाकर मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।
पर मछलियाँ दूर भाग गईं।
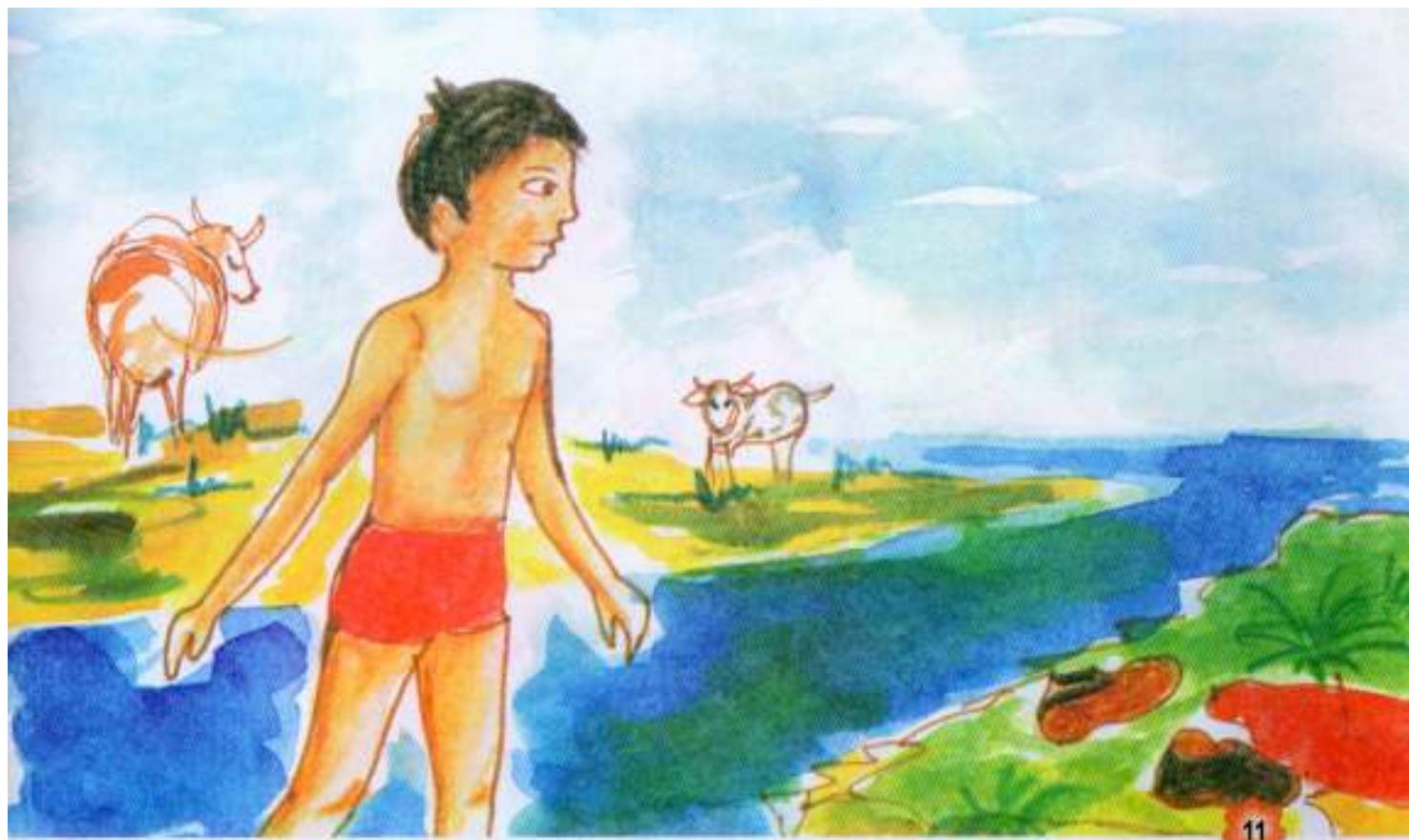
माधव को एक तरकीब सूझी।
उसने सोचा कि वह ज़ुराबों में मछलियाँ पकड़ लेगा।
वह अपनी ज़ुराबें उठाने किनारे पर आया।

माधव की जुराबें किनारे पर नहीं थीं।
उसने अपने कपड़े झाड़-झाड़ कर देखे।
उसने जूते में भी देखा।
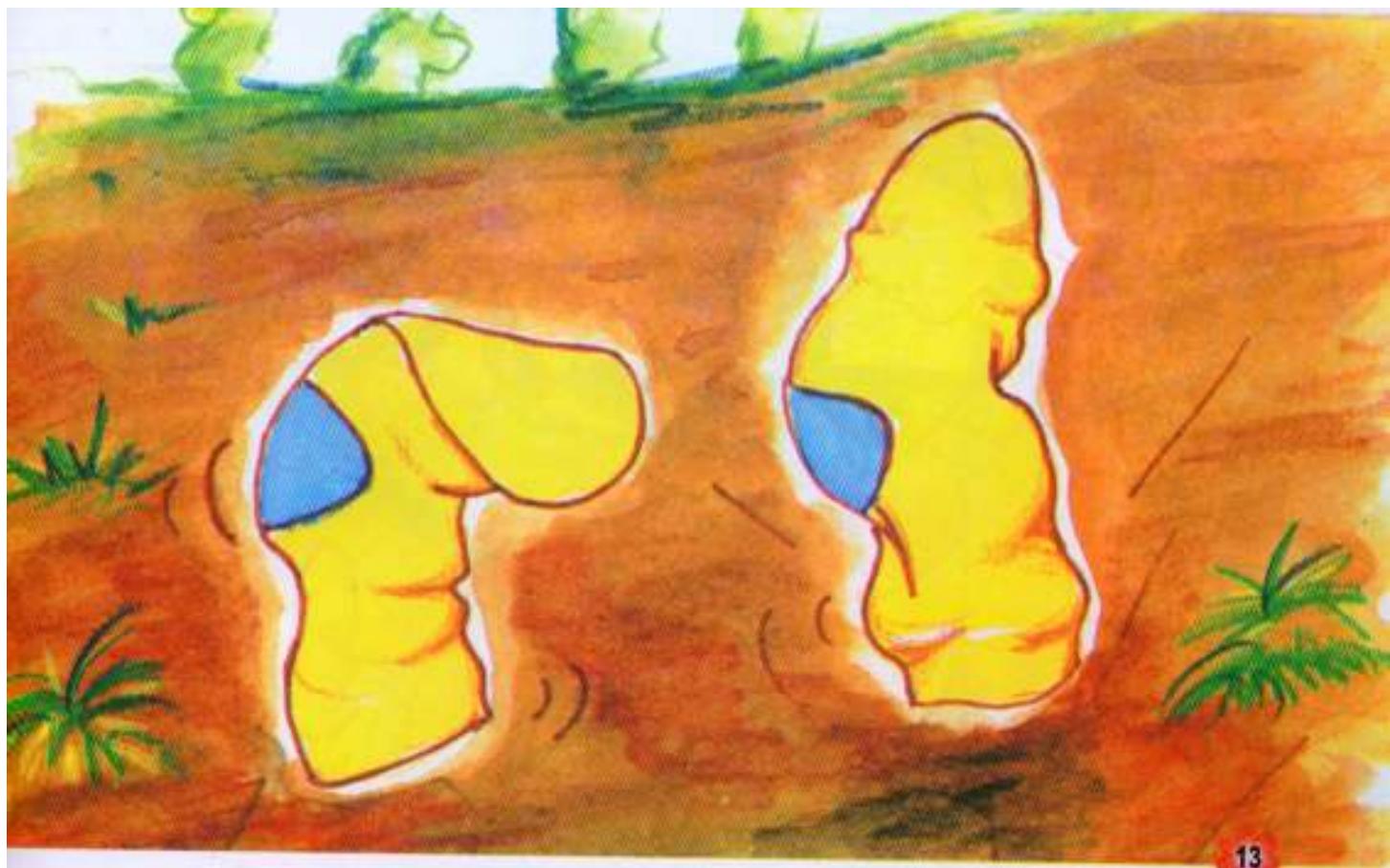
पर उसकी ज़ुराबें किनारे पर नहीं थीं।
माधव की ज़ुराबें तो दूर मैदान में कूद रही थीं।
उसकी नज़र कूदती ज़ुराबों पर पड़ी।

माधव फ़ौरन तालाब से बाहर आ गया।
वह कूदती ज़ुराबों के पीछे भागा।
ज़ुराबें आगे-आगे कूदती रहीं।

माधव तेज़ी से ज़ुराबों के पीछे भागा।
पर वह उनको पकड़ नहीं पाया।
ज़ुराबें कूदती ही रहीं।

जुराबें एक झाड़ी में जाकर अटक गईं।
उनमें से कुछ निकला।
माधव उनको देखकर हँस पड़ा।
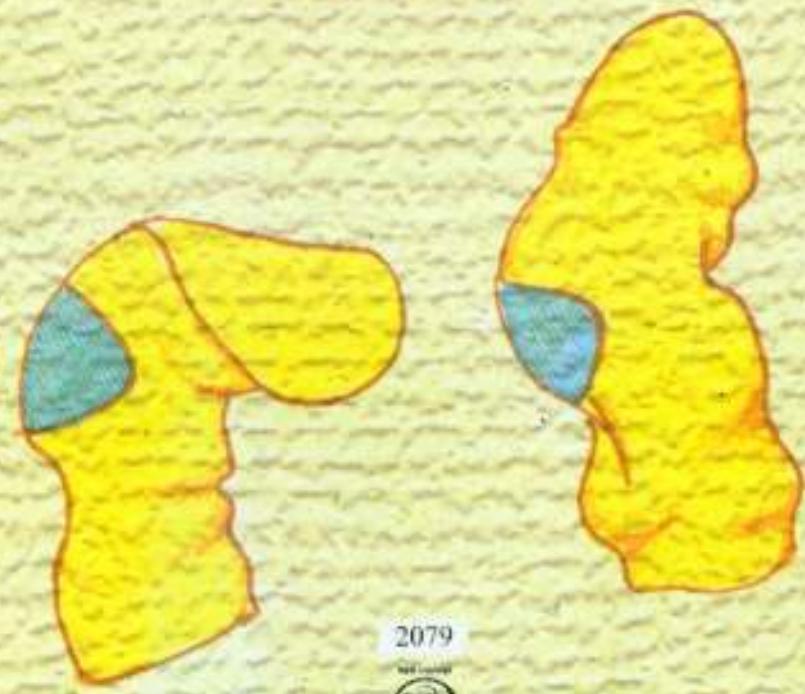
2079

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-880-5